संपादक की कलम से.....।

रामअवतार बैरवा

हिन्दी ग़ज़ल में बहर का प्रश्न

हिन्दी ग़ज़ल दुष्यन्त और उसके बाद से ही विवादों में रही है। पहले तो इसी बात को लेकर कि ग़ज़ल में भाषा क्यों ? ग़ज़ल, ग़ज़ल है, उसे आप किसी भी भाषा में कह दीजिए । अगर मैं कहूं -"मैं संस्कृत में दोहा लिखता हूं।" उत्तर मिलेगा - "लिखले भाई ।" पर लिखेगा तो दोहा ही । वो तीन पंक्तियों का तिहा तो नहीं होगा ? वो 13-11 की मात्रा में ही होगा ना ? उसे किसी भी भाषा में लिख सकते हैं पर उसके मानक दोहे वाले ही होंगे। फिर ग़ज़ल के साथ हिन्दी शब्द क्यों जुड़ा ? उलझाने वाले इसे कितना भी उलझाते रहें, कितना भी खुद को सिद्ध करने की कोशिश में बात को इधर-उधर घुमाते रहें-इसका सीधा और सरल उत्तर है -"हिन्दी ग़ज़ल वो है, जो ग़ज़ल के मानकों पर खरी नहीं है और जिसे उर्दू वाले ग़ज़ल नहीं मानते।" निस्संदेह ये परिभाषा सबको आश्चर्य में डालने वाली हो सकती है पर सच यही है। जितने भी शायर ये कहते हैं कि मैं हिन्दी भाषा में ग़ज़ल कहता हूं और पूरी तरह से बहर में कहता हूं, उन्हें उर्दू की तय बहरों से खुद को मूल्यांकित होना पड़ता है, तब वो ग़ज़ल में गिनी जाती है, साथ ही अपना कोई उस्ताद भी बनाना पड़ता है, मंच पर तो बगैर उस्ताद का नाम बताए कोई चढ़ ही नहीं सकता । इतने सबके बावजूद हिन्दी ग़ज़ल कैसे ? लोग बार-बार दुष्यन्त कुमार के "साये में धूप" ग़ज़ल संग्रह में उनके द्वारा लिखी भूमिका में 'शहर' और 'नगर' का हवाला देकर ये प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं कि दुष्यन्त ने अपनी ग़ज़लें मानकों के हिसाब से कहीं हैं। उनके इस संग्रह के प्रथम संस्करण में प्रकाशित उस भूमिका को यहां रखना चाहता हूं -

"कि मैं उर्दू नहीं जानता लेकिन इन शब्दों का प्रयोग यहां अज्ञानतावश नहीं, जानबूझ कर किया है । यह कोई मुश्किल काम नहीं था कि 'शहर' की जगह 'नगर' लिखकर इस दोष से मुक्ति पा लूं।"

यहां वो सिर्फ काफ़िए में प्रयोग करने के लिए शब्द की बात कर रहे हैं-

"कहां तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए,
कहां चिराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए।"

ISSN:2583-8849

यहां घर को शहर से मिलाने की बात है, बहर की बात नहीं है । ये इस संग्रह की पहली ग़ज़ल है और ये ग़ज़ल उर्दू की किसी बहर में शामिल नहीं है। वो चाहते तो दोनों मिसरों में एक ही "चिराग" शब्द की जगह पहले मिसरे में "चिरागां" की जगह "उजाला" शब्द प्रयोग कर "शब्द दोहराव" के दोष से भी आसानी से मुक्ति सकते थे-
"कहां तो तय था उजाला हरेक घर के लिए,
कहां चिराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए।" पर वो सारे मानक तोड़ना चाहते थे
इसी संग्रह के फ्लैप पर वो लिखते हैं -"यहां मैं साफ कर दूं कि ग़ज़ल मुझ पर नाजिल नहीं हुई। मैं पिछले पच्चीस वर्षों से इसे सुनता और पसंद करता आया हूं और मैंने कभी चोरी-छिपे इसमें हाथ भी आजमाया है। " कुछ लोग कहते हैं कि दुष्यन्त को बहर का ज्ञान नहीं था। जो शायर पिछले पच्चीस वर्षों से ग़ज़ल को सुनता और पसंद करता आ रहा हो, चोरी-छिपे लिखता भी आ रहा हो, (दुष्यन्त ने परदेशी के नाम से भी रचनाएं लिखी हैं) उसे बहर का ज्ञान नहीं ? फिर गीत कैसे पूरी तरह छंद में लिख लिए ? यही नहीं वो फ्लैप में यह भी लिखते हैं -"अगर ग़ज़ल के माध्यम से ग़ालिब अपनी निजी तकलीफ़ को इतना सार्वजनिक बना सकते हैं, तो मेरी दोहरी तकलीफ़ (जो व्यक्तिगत भी है, सामाजिक भी) इस माध्यम के सहारे अपेक्षाकृत व्यापक पाठक वर्ग तक क्यों नहीं पहुंच सकती ? " इस संग्रह में ग़ालिब और निराला दोनों का जिक्र उन्होंने किया है । साथ ही आकाशवाणी, दिल्ली और भोपाल जैसे देश के सबसे प्रमुख केन्द्र के सबसे महत्वपूर्ण विभाग हिन्दी वार्ता में कार्य भी किया है, क्या उन्हें बहर का ज्ञान नहीं था ?

असल में दुष्यन्त कुमार ने ग़ज़ल के सभी मानकों को तोड़कर ग़ज़ल को लिखा था, उनसे पहले ग़ज़ल कही जाती रही थी । लेखन और कहन ही उर्दू और हिन्दी ग़ज़ल का मूल फ़र्क है। बहर को कभी भी लाया नहीं जाता, वह लय के अनुसार स्वत: आती है। जो ग़ज़ल गा सकते हैं, वो आज भी ग़ज़ल में बहर की पैरवी करते हैं । उनका दिमाग हमेशा लय के मंजरों में विचरण करता रहता है, जो ग़ज़ल को लिखते हैं वो कल्पना लोक में डूबे रहते हैं। हिन्दी में आज बहुत से बेहतरीन गाने वाले ग़ज़लें लिख/कह रहे हैं पर अधिकांश किसी बहर की पालना नहीं करते।

आज बहुत से नये लेखक ग़ज़ल के क्षेत्र में उतरने से सिर्फ इसलिए डरते हैं कि उन्हें बहर नही आती। असल बात यह है कि हिन्दी में अभी कोई बहर बनी ही नहीं है । दुष्यन्त ने महज ग़ज़ल की शुरुआत की है, जो किसी बहर में शामिल नहीं हैं। "साए में धूप" ग़ज़ल संग्रह को पचास वर्ष पूरे होने वाले हैं । बहर से बेपरवाह ग़ज़ल लिखें। बहर में लिख सकें तो और बेहतर । ध्यान यह भी रखें कि लेखन के लिए विचार, शब्द, कल्पना और भाव ईश्वर की देन हैं और बहर, छंद या गायन शैली इंसान ने विकसित की है । इंसान कितना भी महान बन जाए, वो ईश्वर नहीं बन सकता ।